क्या परमेश्वर न्याय के विषय मे सोचता है?

ठीक है, मुझे आप सभी को इकट्ठा करने दें।

हम थोड़ा सा समय लेंगे आज रात के हमारे
बड़े प्रश्न का उत्तर देने के लिए,

और यह प्रश्न है, "क्या परमेश्वर न्याय
के बारे में सोचता है?"

इस प्रश्न का बहुत छोटा उत्तर है,
और वह छोटा उत्तर है, "हाँ"

परंतु आप चाहते हैं कि मैं
इसपर थोड़ा और बताऊं।

दरअसल, मैं सोचता हूँ कि मेरी
बाइबल की समझ के अनुसार

न सिर्फ परमेश्वर न्याय के बारे में सोचता है परंतु
मैं सोचता हूँ परमेश्वर हम में से प्रत्येक से

कहीं अधिक अभिलाषा से न्याय के बारे सोचता है।
परंतु यह समझने के लिए किसी तज्ञ की जरूरत नहीं

कि हमारे देश के कई लोग
क्यों नहीं सोचते कि यह सच है।

आप घर जाने के बाद एक छोटा सा प्रयोग
कर सकते हैं, आप रेडियो सुन सकते हैं,

आप टी.वी के समाचार देख सकते हैं,
आप समाचार पत्रों को इंटरनेट पर देख सकते हैं,

और आप उदाहरण के बाद उदाहरण पाएंगे,
मुझे यकीन है, गलत कामों का।

हम इसे व्यक्तिगत स्तर पर देखते हैं,
हम इसे पारिवारिक स्तर पर देखते हैं,

हम इसे राष्ट्रीय स्तर पर देखते हैं।
हम इसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देखते हैं।

उदाहरण पर उदाहरण पर उदाहरण उन चीज़ों का
जो वैसे नहीं होती जैसा उन्हें होना चाहिए।

© Lee McMunn, 2011

तो यह देखने के लिए किसी तज्ञ की जरूरत नहीं
की क्यों बहुत से लोग सोचते हैं

"मुझे नहीं लगता की परमेश्वर
सचमुच न्याय के प्रति वचनबद्ध है।"

तो क्यों मैं यह निश्चयपूर्वक कह
सकता हूँ कि "हाँ, वह है"?

ठीक है, क्योंकि जो आज रात
हमने सीखा है उसके कारण।

हम किस चीज़ पर आज रात लक्ष केंद्रित कर रहें है?
आज रात की हमारी चर्चा के पहलू में से

एक रहा है यीशु का क्रूस
पर कष्ट सहना।

और यह यीशु का क्रूस है, यीशु की मृत्यु,
जो हमें पूरी निश्चितता देता है

की हमारा परमेश्वर सचमुच अभिलाषा
सहित वचनबद्ध है न्याय के लिए।

आप शायद सोचेंगे, "यह सचमुच
अजीब लगता है, यह कैसे कार्य करता है?"

क्योंकि आप सोचेंगे, "सचमुच क्रूस एक
ऐसी जगह है जहाँ आप जाएँगे

अगर आप परमेश्वर के प्रेम
को प्रत्यक्ष देखना चाहेंगे।"

और यह सच है क्योंकि क्रूस के
बारे में हम क्या पाते हैं?

हम जानते हैं की यह वहीं था,
जहाँ पिता ने उसके एकलौते पुत्र का बलिदान दिया,

जो स्वेच्छा से गया बागियों की जगह पर
कष्ट उठाने ताकि हम छुटकारा पा सकें,

ताकि हम स्वतंत्र हो सकें उस
सज़ा से जिसके हम योग्य हैं।

यह प्रेम का अभूतपूर्व बलिदान है।

© Lee McMunn, 2011

और एक मसीही होने के नाते, मैं बार बार
जाता हूँ यीशु कि मृत्यु को देखने के लिए।

जब मैं सुबह को उठता हूँ और मेरी
भावनाएँ सब जगह बिखरी होती हैं,

जब मेरे साथ ऐसी घटनाएँ घटती हैं जो मुझे
परमेश्वर के प्रेम पर भावनात्मक रूप से शक कराती हैं,

क्रूस एक महान जगह है जाने के लिए।
परमेश्वर के प्रेम का प्रदर्शन।

परंतु यह एक ऐसी जगह भी है जहाँ परमेश्वर के
न्याय को दर्शाया जाता है।

अब इसे समझने के लिए, आपको गुनाह और सज़ा
के बीच के संबंध को देखना जरूरी है।

हम जानते हैं की वहाँ एक स्पष्ट जोड़ है।
गंभीर गुनाह गंभीर सजाओं के योग्य होते हैं,

और बाइबल यह कहती है कि जिस
प्रकार हम जीए हैं हम परमेश्वर की

सज़ा को सहने के योग्य हैं।
वास्तव में, अनंतकाल तक सहने के।

आप सिर्फ एक मानवी न्यायालय की कल्पना कर सकते हैं,
है ना, जहाँ गुनाहगार कटघरे में है,

उनका गुनाह साबित हो चुका है,
और वे न्यायाधीश से कहते हैं, "ठीक है, मैं माफी चाहता हूँ।"

और न्यायाधीश कहता है,
"तो ठीक है, तुम जा सकते हो।"

आप अपने आप में सोचते हैं,
"इसके बारे में कुछ गलत है।"

अगर यह समाचार पत्रों में होता
आप अपने आप में सोच रहे होते,

"यह उचित नहीं। यह अन्याय है!"
कितना अधिक, दैवी न्यायालयों में।

© Lee McMunn, 2011

हाँ, हमारा परमेश्वर अनुग्रहकारी है। हाँ, वह
अद्भुत तरीके से अति क्षमाशील है,

परंतु अगर परमेश्वर हमारे गलत कामों की सज़ा न दे,
तो वहाँ बड़े, बड़े प्रश्न होंगे

परमेशवर के चरित्र के बारे में।
अब, हम क्या जानते हैं?

हम जानते है की क्रूस पर जैसे यीशु ने कष्ट सहा,
परमेश्वर गलत कामों को सज़ा दे रहा था।

ऐसा नहीं कि परमेश्वर ने इसे कालीन के नीचे छुपा दिया
और उसका कुछ नहीं करना चाहा।

परंतु परमेश्वर इतनी अभिलाषापूर्ण तरीके से न्याय के
प्रति वचनबद्ध था, की उसने अपने एकलौते पुत्र को भेजा

ताकि जो बागी इसके योग्य थे वे इससे छूट सकें।
इसलिए नहीं क्योंकि न्याय नहीं ज़ारी किया गया,

परंतु इसलिए क्योंकि यीशु ने
हमारे स्थान पर सज़ा को सहा।

वहाँ परमेश्वर था, न्याय से वचनबद्ध।
उसी के साथ,

हम परमेश्वर के उमड़ते और उदार प्रेम
का अद्भुत प्रदर्शन प्राप्त करते हैं

और परमेश्वर कि न्याय के प्रति प्रतिबद्धता को भी।
अब आप अपने आप में सोचते हैं,

“आप हमारे दिन ब दिन के सारे
सबूतों से उसका मेल कैसे करेंगे

जहाँ हम न्याय होते हुए नहीं देखते?
परमेश्वर कैसे न्याय से इतना वचनबद्ध हो सकता है

और तौभी हम उसे दुनिया में नहीं देखते?”
अच्छा, इसके लिए बाइबल का उत्तर है

भविष्य को देखें। क्योंकि बाइबल कहती है की
एक अद्भुत दिन आ रहा है

© Lee McMunn, 2011

जब न्याय दिखाई देगा।
तब हर एक मनुष्य

खड़ा होगा पुनरुत्थान हुए
राजा यीशु के सामने।

हम उसके सामने खड़े होंगे और हमने अपना जीवन कैसे
जिया इसका हिसाब देना होगा।

वह न्याय का दिन होगा। अब बढ़िया समाचार यह है की
हम हमारे न्यायेधीश के सामने खड़े हो सकते हैं,

एक शत्रु कि तरह नहीं, परंतु एक मित्र और अनुयायी की
तरह। परंतु यह बात है।

बाइबल कहती है अगर हम यीशु को मित्र
और अनुयायी की तरह नहीं मिलते

तो हमें हमारे गलत कामों के लिए
स्वयं ही चुकाना पड़ेगा, अनंतकाल के लिए।

अब मैं जानता हूँ की आज रात यहाँ कुछ ऐसे बैठे हैं,
जो यीशु के पीछे हो लेने

कि कीमत को गिन रहें है। आप उस कीमत को गिनने
कि कोशिश कर रहें हैं की इसका मतलब क्या होगा

कि उसे अपने जीवन का अधिकारी बनाना।
आप उस किमत को गिनने कि कोशिश कर रहें है

की इसका मतलब क्या है कि यीशु को
समर्पण करना। ठीक है, बढ़िया। कीजिए।

परंतु मैं चाहता हूँ कि आप इस बात पर ध्यान दें।
ना करने कि कीमत क्या है?

क्योंकि बाइबल कहती है की एक दिन होगा जब
आप राजा यीशु के सामने खड़े होंगे,

और अगर आप उससे मित्र
और अनुयायी की तरह नहीं मिलते,

तो आप आपके गलत कामों के लिए स्वयं ही
चुकाएँगे सारे अनंतकाल के लिए

© Lee McMunn, 2011

और तौभी यीशु आज रात हम
में से हर एक को दे रहा है,

वह हमें क्षमा दे रहा है।
और वह सिर्फ क्षमा प्रदान नहीं कर रहा

वह हमें उसमें सिद्ध पाए जाने
का मौका प्रदान कर रहा है।

और तो मैं आपको उत्साहित करूँगा अगर
आप उसके बारे में सोच रहें है, किमत को गिनना,

परमेश्वर के अनुग्रह का लाभ उठाएँ
और उसकी बाहों में आएँ।

क्या परमेश्वर न्याय के प्रति वचनबद्ध है? बिलकुल!
परंतु वह दया के प्रति भी वचनबद्ध है।

और वह हमें मौका प्रदान करता है कि हम उसकी प्यार
भरी बाहों में आ जाएँ इससे पहले की बहुत देर हो जाए।

अच्छा, क्यों ना आप अपने टेबलों के पास कुछ मिनिट
लें इसके बारे में बातचीत करने केलिए।

Identity – Who is God? Who are we?

© Lee McMunn, 2011

All rights reserved. Except as may be permitted by the Copyright Act, no part of this publication may be reproduced in any form or by any means without prior permission from the publisher.

Published by 10Publishing, a division of 10ofThose Limited.

All Hindi scripture quotations are taken from Hindi-O.V. © The Bible Society of India.

10Publishing, a division of 10ofthose.com
Unit 19 Common Bank Industrial Estate, Ackhurst Road, Chorley, PR7 1NH, England.
Email: info@10ofthose.com
Website: www.10ofthose.com